अनुसूचित जातियों में व्यावसायिक गतिशीलता

डॉ0 प्रमिला कुमारी

व्यवसायिक गतिशीलता 20वीं शताब्दी की विशेषण थी। अब 21वीं सदी में यह और जोर पकड़ लेगी ऐसी आशा की जाती है 'स्थिर' समाजों में जहां पेशा वंशानुगत होता था, अब व्यवसायिक गतिशीलता देखने को मिल रही है। प्रत्येक जाति के लोग अब लाभ के आधार पर पेशों का चुनाव करने लगे हैं। व्यवसायिक निषेध की बात अब किसी भी जाति का व्यक्ति नहीं करता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण अब सभी जाति तथा सभी धर्म के लोग अपनी–अपनी इच्छा, अर्जित गुण तथा लाभ के आधार पर पेशों का चुनाव कर रहे हैं।

व्यवसायिक गतिशीलता आधुनिकीकरण को तभी जन्म दे सकती है, जब लोगों के पेशों में सुधार के कारण उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हो। लोग अपने परम्परागत पेशे को तभी छोड़ रहे हैं जब उन्हें यह आभास हो जाता है कि इससे उनकी सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति सुधरेगी।जब हम सामाजिक गतिशीलता का अध्ययन करते हैं तो हम व्यक्तियों की गतिशीलता जो एक पद से दूसरे पद में चाहे वह ऊॅचा हो अथवा नीचा, का भी अध्ययन करते हैं जो सामाजिक व्यवस्था में घटित होता है।व्यवसायिक गतिशीलता के कारण लोगों की आर्थिक स्थिति में राजनीतिक दृष्टिकोण में, नामकरण में, मित्रमंडली में तथा धार्मिक मान्यताओं में परिवर्तन होता है।